भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान
श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर-334 006 (राज)
ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE
Sri Ganganagar Highway, Beechwal-BIKANER-334 006
E-mail- *ciah@nic.in, www.ciah.icar.gov.in.* Phone-0151-2250960 : Fax-2250145

एडवाईजरी: मई 2024 **दिनांक 08.05.2024**

किसानों के लिए शुष्क बागवानी फसलों के संरक्षण एवं उचित देखभाल करने की सलाह

1. इस समय वातावरण का तापमान घट-बढ़ रहा है लेकिन आने वाले दिनों में तापमान में बढ़ोत्तरी एवं गर्म लू चलने की भी संभावना है। इसीलिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपनी बागवानी फसलों को भीषण गर्मी से बचाने के लिए समय-समय पर जीवन रक्षक सिंचाई (Life saving irrigation) करते रहें और नमीं सरक्षण के लिए उचित पुआल जैसे घास-फूस व शेडनेट का भी उपयोग करते रहें।

2. फलदार पौधे जैसे बील एवं लसौड़े के फल बनकर तैयार होना शुरू हो गए हैं। अत: उचित आकार के परिपक्व फलों/ फलियों को तोड़कर उनकी अच्छी तरह से ग्रेडिंग-पेकिंग करके स्थानीय बाज़ार, गाँव, मंडी में समय पर बेचकर लाभ लेने की सलाह दी जाती है।

3. अभी इस समय बेर के पौधों में कटाई-छंटाई (Training and Pruning) करने का उत्तम समय है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि बेर की फसल में उचित आकार की कटाई- छटाई करें एवं कटे हुए भाग (टहनी के मूंह) पर नीला थोथा का घोल बनाकर लेप कर दें ताकि पेड़ की टहनियों को कीड़ों – मकोड़ों के आक्रमण से बचाया जा सके।

4. अभी खजूर के फलों का बढ़ने का समय है और वातावरण का तापमान बढ़ने की पूरी संभावना है। अत: खजूर के पेड़ों में नियमित रूप से सिंचाई करते रहें ताकि फलों की अच्छी बढ़वार हो सके और भीषण गर्मी से कोई नुकसान नहीं हो। फलों पर पक्षियों का प्रकोप हो सकता है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि फलों को पक्षियों से बचाने के लिए, फल गुच्छों को जाली या एल्डी-मिल्की-यूवी प्लास्टिक बैग (थैला) से ढक दें। परंतु ध्यान रहे कि बैग का नीचला सिरा खुला रहे ताकि फलों को हवा व प्रकाश पर्याप्त मात्रा में मिलते रहें।

5. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि मई – जून माह में अपने खेतों की गहरी जुताई करें । इसके लिए मिट्टी पलटने वाले हल जैसे-मोल्ड बोल्ड हल, डिस्क प्लाऊ या डिस्क हेरो से 8-10 इंच की गहराई तक जुताई करनी चाहिए ताकि इस समय वातावरण के उच्च तापक्रम के कारण जमीन के अंदर स्थित हानिकारक कीट पतंगों की लट, अंडा, प्युपा व हानिकारक सूक्ष्मजीव आदि संपूर्ण रूप से नष्ट हो जाये। ऐसा करने से मिट्टी की वर्षा जलधारण क्षमता भी बढ़ जाएगी एवं जल, प्रकाश, वायु व तापक्रम का संचरण भी पर्याप्त हो जाएगा जो अगली फसल के अच्छे उत्पादन के लिए अनिवार्य है। साथ ही इससे भूमि की भौतिक एवं रासायनिक सरचना में भी सुधार होगा और मिट्टी भी मुलायम व भूरभरी हो जाएगी जो कि अगली फसल की अच्छी पैदावार के लिए बहुत जरूरी है। यह जुताई लवणीय-क्षारीय मृदाओं में सुधार का भी कार्य करेगी।